मंथन

यूथ रूबरू का मासिक विचार पत्र

वर्ष : 06
अंक : 01
माह : नवम्बर 2020
मूल्य : निःशुल्क

हमारी
सिर्फ मौन
मुस्कान शत्रु को भी
अपना बना लेती है।

अंतर्मुखी

संपादकीय

विचारों का नया 'मंथन'

श्री फल फाउंडेशन द्वारा संचालित यूथ रूबरू का यह मासिक विचार पत्र 'मंथन' लंबे समय के बाद आप के हाथों में आ रहा है। पिछले अंकों के मुकाबले इस बार कलेवर कुछ नया है। इसमें कुछ परिवर्तन है और परिवर्तन तथा इसे और बेहतर बनाने का यह क्रम लगातार चलता रहेगा।

मंथन से आप जुड़ें और ज्ञान और संस्कार को जीवन मे उतारें। मंथन विचारों का एक ऐसा मंच है जहां पर आप को हर उस विषय के बारे में पढ़ने के लिए कुछ मिलेगा जो आप को आपकी बुद्धि, शक्ति और धन का सही उपयोग करने में सहायता करेगा।

आज बुद्धि, शक्ति और धन का सही उपयोग नही होने से परिवार, समाज यहां तक कि देश से भारतीय संस्कृति और संस्कारों का विनाश होता जा रहा है। मंथन इन सब विषयों पर प्रकाश डालेगा। युवाओं के जोश और बुजुर्गों के अनुभव के आधार पर हम कैसे अपने संस्कारों और संस्कृति को वापस जीवंत कर सकते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण कैसे विकसित कर सकते हैं, ऐसे कौनसे तरीके हो सकते हैं जो हमारी बुद्धि, शक्ति और धन का सही उपयोग करने में सहायक हो सकते हैं। ऐसे कई विषय हैं जिन पर मंथन के माध्यम से चर्चा की जाएगी।

आप याद रखिए कि मंथन आप सब के विचारों का मंच है। यहां हम आपको ज्यादा से ज्यादा पढ़ना चाहेंगे। आपके विचारों पर चर्चा होगी। चर्चा के जरिए इस निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास रहेगा कि जो आप सोच रहे हैं या जो आपके विचार हैं, वे आपके जीवन निर्माण में किस हद तक सहायक हैं।

वर्तमान समय की परिस्थितियां ऐसी हैं, जिन पर समाज के हर व्यक्ति को विचार करने की जरूरत है। मंथन के माध्यम से समाज की इन परिस्थितियों पर भी सकारात्मक दृष्टि से विचार किया जाएगा। हमारी कोशिश होगी कि आप तक सिर्फ सकारात्मक विचार पहुंचाए जाएं, क्योंकि नकारात्मकता हमारे चारों तरफ बहुत है और इसे फैलाने वालों की कमी भी नहीं है।

दीपावली के शुभावसर पर मंथन का यह अंक आप तक पहुंच रहा है। दीपोत्सव अंधकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। अंधकार अर्थात नकारात्मकता और प्रकाश यानी सकारात्मकता। हमारे जीवन में अंधकार पर प्रकाश हमेशा विजयी होना चाहिए। अंधकार आएगा, इसे आने से कोई रोक भी नहीं सकता, लेकिन फिर प्रकाश भी आएगा, उसे भी आने से कोई रोक नहीं सकता। बस कोशिश यही करनी है कि यह प्रकाश लम्बे समय तक टिके। इसके लिए जो तेल, बाती हमें चाहिए यानी प्रसन्नता, साहस और बुद्धिमत्ता, वह हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बनना चाहिए। मंथन के जरिए ऐसा ही हमारा ऐसा ही कुछ प्रयास रहेगा...तो हमसे जुड़िए और पूरी सक्रियता के साथ जुड़िए। अपने विचारों, कार्यो, उपलब्धियों से हमें अवगत कराइए और हम जो दृष्टि आपको देंगे, उसका जितना लाभ उठा सकते हैं, उठाइए। इसी भावना के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

आप सभी को दीपोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रथम आलेख

आइए, जानें दीपावली के गूढ़ धार्मिक अर्थ को

गणिनी आर्यिका स्याद्वादमति माताजी

कैवल्य ज्ञान का प्रतीक हैं दीपमालिकाएं

दीपमालिकाएं कैवल्य ज्ञान का प्रतीक हैं। अंधकार का नाश हो और सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, इस भावना से दीपक जलाए जाते हैं और इसी भावना से हमेशा जलाए भी जाने चाहिए। इसी तरह दीपावली से जुड़े अन्य त्योंहारों के भी गूढ़ अर्थ हैं। आइए इनके बारे में जानते है-

हर बार की तरह हम सब दीपावली मनाएंगे। महावीर निर्वाणोत्सव पर लड्डू भी चढ़ाएंगे, लक्ष्मी पूजन भी करेंगे, धनतेरस पर बर्तन भी खरीदेंगे और रूप चौदस पर रंग-रूप भी निखारेंगे। प्रतिदिन दीप जलाएंगे पर क्या वास्तव में दीपावली बस यही सब करने के लिए आती है? जवाब होगा नहीं। दीपावली तो इससे कहीं अधिक गूढ़ अर्थ लिए तर्कसंगत आध्यात्मिक साधना का पर्व है।

इसे समझना से पहले गौतम गणधर और भगवान महावीर के एक वार्तालाप का अंश पढ़िए

गौतम गणधर -भगवन्! मुझे केवल ज्ञान की प्राप्ति कब होगी?

भगवान महावीर- जब तक मोह का नाश नहीं होगा तब तक तुम्हारी कैवल्य ज्योति प्रकट नहीं होगी।

गौतम गणधर- भगवन्! मुझे किसका मोह?

भगवान महावीर- जब तक तुम्हारा मुझसे राग है, कैवल्य में बाधा बनी रहेगी।

गौतम गणधर- यह राग कब दूर होगा?

भगवान महावीर- जब मुझे मोक्ष प्राप्त होगा तब।

तदनुसार कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि अमावस्या की प्रभात वेला में महावीर भगवान् ने पावापुर सिद्ध क्षेत्र में निर्वाण प्राप्त किया। इसी अमावस्या की शाम गौतम गणवर स्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। अर्थात जिस दिन महावीर मोक्ष की राह पर निकल गए राग, मोह सब खत्म हो गया और उनके शिष्य को भी केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई।

धनतेरस

दीपावली पर्व का प्रथम दिन धनतेरस नहीं अपितु धन्यतेरस है। भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी के दिन बाह्य समवशरण लक्ष्मी का त्याग करके मन, वचन, काय का निरोध किया। वीर प्रभु के योगों के निरोध से यह त्रयोदशी धन्य हो उठी, इसलिए यह 'धन्यतेरस' हुआ और यह पर्व त्याग करने की कला सिखाने वाला पर्व कहलाया, पर अज्ञानवश हम इस दिन सोना, बर्तन आदि खरीद कर परिग्रह करते हैं, जबकि हमें इस दिन मन, वचन, काय से कुचेष्टाओं का त्याग करना चाहिए। बाह्य लक्ष्य से हटकर अंतर के शाश्वत स्वर्ण रत्नत्रय की खोज करनी चाहिए।

रूप चौदस

दीपावली पर्व का दूसरा दिन रूप चौदस है। इस दिन भगवान महावीर ने 18,000 शीलों की पूर्णता को प्राप्त किया था। वे रत्नत्रय की पूर्णता को प्राप्त हुए थे। अयोगी अवस्था से स्वरूप में मग्न हुए थे। अतः रूप चौदस अपनी आत्मा को शील, सत्य, सदाचार से सजाने की कला सिखाता है। इस दिन ब्रह्मचर्य में रहकर व्रतादि धारण कर आत्म स्वभाव में आने का प्रयत्न करना चाहिए, वही सच्ची रूप चौदस है।

दीपावली

इस पावन दिन भगवान महावीर को निर्वाण लक्ष्मी प्राप्त हुई थी, इसलिए आत्मसुख प्राप्त्यर्थ हमें भगवान महावीर की पूजा करनी चाहिए। अमावस्या की शाम गौतम गणधर स्वामी को केवल ज्ञानरूपी लक्ष्मी का साथ मिला था। अर्थात यह ज्ञानलक्ष्मी प्राप्त करने का पर्व है, लेकिन हम सब आज निर्वाण को भूल लक्ष्मी की पूजा करने लगे। अरे चपल लक्ष्मी पुण्य की चेरी है, पुण्य करो। पुण्य के अभाव में लक्ष्मी आपको छोड़ के जाएगी ही। धर्म को छोड़ लक्ष्मी के पीछे मत दौड़ो और इस दिन भगवान महावीर व गौतम गणधर का पूजन करो।

गोवर्धन पूजा

भगवान की दिव्य ध्वनि स्थात् अस्ति-नास्ति, अवक्तव्य आदि सात रूपों में खिरी थी, इसलिए यह गोवर्धन का दिन माना गया। 'गो' यानि जिनवाणी, 'वर्धन' अर्थात प्रकटित होना या बढ़ना। इस दिन तीर्थकर की देशना के अभाव के पश्चात पुनः जिनवाणी का प्रकाश हुआ, वृद्धि हुई, इसलिए जिनवाणी की पूजा करना चाहिए। पर अज्ञानतावश रूढ़ियों के चलते सत्य का गला घुट रहा है। प्रायः घर में गोबर से एक चित्र बनाया जाता है। एक मां और उसके सात बच्चे आदि रूपों से उसकी चित्रावली बना घर-घर में पूजा की जाती है। इस चित्र को सप्तपूत माँ नाम देते हैं। महानुभावों सत्यता यह है कि जिनेन्द्र देव अरहंत के मुखकमल से प्रस्फुटित मां जिनवाणी हैं। सप्त भंग उसके पुत्र हैं। सप्तपूत की मां अर्थात जिनवाणी, उसकी आराधना करनी चाहिए, स्वाध्याय करना चाहिए।

निर्वाण लाडू क्यों

सभी नैवेद्य में प्रिय लड्डू होता है। सभी को दुःखों से छूटना है और मुक्ति चाहिए। प्रिय वस्तु की प्राप्ति के लिए वस्तु का त्याग करना होता है। लड्डू को मोदक भी कहते हैं। यह मुद् धातु से बना है मुद का अर्थ आनंद है अर्थात आनंद देने वाला मोदक हुआ। अविनाशी आनंद के प्राप्त्यर्थ मोदक चढ़ाया जाता है। लड्डू को आगे-पीछे मध्य कहीं से भी खाओ मोठा ही मीठा है। उसी प्रकार मोक्ष में किसी भी क्षेत्र से कभी भी जाइए सुख ही सुख है। मोदक मोक्ष के अनादिकालीन सुख का द्योतक है। अतः ध्यान रहे, निर्वाण दिवस पर लाडू (लड्डू) चढ़ाने की प्रथा मात्र काल्पनिक या रुढ़िमात्र नहीं। इसके पीछे बहुत रहस्य हैं। इसका नाम आते ही मुख में पानी नहीं, मन में जिनवाणी के चिन्तवन का आनंद प्राप्त होना चाहिए।

दीपावली अज्ञानरूपी अंधकार से निकलकर ज्ञानपुंज में आने का पर्व है। दीपावली बाह्य लक्ष्मी का त्याग कर अंतरंग लक्ष्मी पाने का पर्व है। यह जीवन के कष्टों से मुक्ति पाकर मोक्ष मार्ग पर जाने का पर्व है।

आइए इसे इसी गरिमा से मनाएं।

कथा सरिता

संगति का असर

प्रस्तुति : **प्रियंका सेठी,** किशनगढ़

एक जंगल में तोते के दो बच्चे रहते थे। दोनों सगे भाई थे, लेकिन दोनों बचपन में बिछड़ गए। उनमें से एक बच्चे को तपस्वी लोग आश्रम में और दूसरे को कुछ चोर अपने साथ में ले गए। दोनों बड़े होने लगे। आश्रम में रहने वाला तोता तपस्वी की संगति में रहकर अत्यंत गुणी बन गया। वह भी तपस्वी की तरह अतिथियों को आने पर उत्तम-उत्तम शब्दों द्वारा उनका सत्कार करता था। वही दूसरे तोते ने चोरों की संगति में रहकर अपशब्द बोलना, बेवजह हमला करना, दिन भर बेवजह बोलते रहना जैसी आदतें सीख ली। एक बार एक राजा रास्ता भूलकर भटकता-भटकता चोरों की टोली में जा पहुंचा। उसको देखते ही टोली में रहने वाला तोता जोर-जोर से चिल्लाने लगा दौड़ो-दौड़ो धनाढ्य आया है। इसको पकड़ो, बांधो, मारो, उसके कान नाक छेदो। इसके पास बहुमूल्य रत्न है। लूट लो इसे। इसको रस्सी से बांधकर गड्ढे में डाल दो। यह महादुष्ट है, गरीबों का खून चूसता है। तोते की कर्कश वाणी सुनकर राजा अत्यधिक भयभीत हो गया । वह शीघ्र वहां से भाग खड़ा हुआ। तत्पश्चात वह तपस्वियों के आश्रम में पहुंचा। आश्रम के तोते ने राजा को देखकर कहा आइए उच्चासन पर बैठिए। गर्म जल से हाथ पैर धोइए । आपके आगमन से हमारा आश्रम पवित्र हो गया है। हे तपस्वियों ये महापुरुष है, इनका आदर -सत्कार करो इन्हें भोजन कराओ उनका सत्कार करो। तोते के मधुर वचनों को सुनकर राजा ने विचार किया- अहो ! यह पक्षी कितना मधुर भाषी है । रूपरंग में तो यह तोता भी उस दुष्ट तोते के समान ही है, परंतु व्यवहार में यह कितना सभ्य और कुशल है। राजा ने बात ही बात में तपस्वियों को उस तोते के विषय में बताया तो तपस्वियों ने कहा -राजन ! ये दोनों सगे भाई हैं परंतु चोरों की संगति से वह असभ्य बन गया है और तपस्वियों के सान्निध्य में रहकर व्यवहार कुशल और सभ्य बन गया है। तोते की आवभगत से राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

जिस प्रकार तोतों पर संगति का प्रभाव हुआ है उसी प्रकार सज्जन और दुर्जन की संगति से मानव भी सज्जन और दुर्जन बन जाता है। आत्म कल्याण के इच्छुक मानव को दुर्जनों की संगति का परित्याग करके सज्जनों की संगति करनी चाहिए।

धर्म का मर्म

तीर्थंकर के लक्षण

जैन धर्म में तीर्थंकर की परिभाषा विभिन्न ग्रंथो में अलग अलग दी गई है। आइए जानते हैं तीर्थंकरों के विषय में क्या कहा गया है-

- जो तीर्थ के नायक होते हैं, धर्मतीर्थ के प्रवर्तक होते हैं, जिन के कल्याणक होते हैं, उन्हें तीर्थंकर कहते हैं।

धवला पुस्तक - 1 अनुसार

- जिनके ऊपर चंद्रमा के समान धवल चैंसठ चंवर ढुलते हैं, ऐसे सकल भुवन के अद्वितीय स्वामी को श्रेष्ठ मुनि तीर्थंकर कहते हैं।

भगवती आराधना के अनुसार

- जो मति-श्रुत अवधि और मनः पर्यय ऐसे चार ज्ञानों के धारक, स्वर्गावतरण, जन्माभिषेक और दीक्षा कल्याणदिकों में चतुर्णिकाय देवों से पूजे गए हैं, जिनको नियम से मोक्ष प्राप्ति होगी, श्रुत और गणधर के भी जो कारण है, उनको तीर्थंकर कहते हैं।
  अथवा
- रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग को जो प्रचलित करते हैं, उनको तीर्थंकर कहते हैं।
- संसार से पार होने के कारण को तीर्थ कहते हैं। उसके समान होने के कारण आगम को तीर्थ कहते हैं, उस आगम के कर्ता को तीर्थंकर कहा जाता है।
- जो सकल लोक के एक अद्वितीय नाथ है । कुन्द के फूल के समान श्वेत चैंसठ चंवर जिनके ऊपर ढुरते हैं वह तीर्थंकर हैं।

आलेख द्वितीय

निर्वाणोत्सव है दीपावली

मुनिश्री पूज्य सागर जी महाराज

दीपावली.....अर्थात अंधकार पर प्रकाश की विजय का उत्सव। दीपावली भारतीय हिन्दू परम्परा और संस्कृति का सबसे प्राचीन और सबसे महत्वपूर्ण त्योंहार है। हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिख, आर्य समाज यानी भारतीय परम्परा से निकले जो भी धर्म और मत है, लगभग उन सभी में दीपोत्सव मनाने के अपने-अपने कारण और शायद इसी वजह से दीपावली पूरे भारतवर्ष का त्योंहार है।

हर वर्ष कार्तिक मास की अवस्या जो अंग्रेजी कलेण्डर के हिसाब से अक्टूबर या नवम्बर में पड़ती है, उस दिन पूरा भारत अपनी-अपनी और धार्मिक रीति रिवाज के अनुसार दीपावली मनाता है। धार्मिक रीति-रिवाज और परम्पराएं भले ही सबकी अलग-अलग हों, लेकिन इस उत्सव का प्राणतत्व एक ही है और वह 'प्रसन्नता'। चाहे भगवान राम के अयोध्या नगरी लौटने की खुशी हो, चाहे भगवान के महावीर के निर्वाण की प्रसन्नता, चाहे गुरू हरगोबिंद सिंह को कारागार से रिहा करने का जश्न हो यानी कारण कुछ भी हो लेकिन यह वह दिन है जब हम सब प्रसन्न होते हैं और इस प्रसन्नता को ही दीपमालिका सजा कर व्यक्त करते हैं।

निर्वाणोत्सव का दीया

तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने की यात्रा। भारतीय परम्परा और संस्कृति में प्रकाश का अपना ही महत्व है। यह माना जाता है कि एक दीया मात्र सभी तरह के अंधकार को दूर कर सकता है और व्यक्ति को सही राह दिखा सकता है। चैबीसवें तीर्थंकर भगवान का निर्वाण होना और उनके शिष्य गौतम गणधर को केवल ज्ञान की प्राप्ति होना, इसी बात का प्रतीक है ज्ञान का दीया जल गया है और अब इससे जो प्रकाश हुआ है, उसे साथ लेकर सभी मनुष्यों को मोक्षमार्ग पर चलना है। भगवान् ने संसरण से मुक्त होकर मोक्षलक्ष्मी का वरण किया। अतएव दीपावली के अंकन में समवसरण का चित्र बनाकर ज्ञान-लक्ष्मी की पूजन की प्रवृत्ति हुई। हालांकि अब सभी लोग ज्ञानलक्ष्मी को तो भूल गये, उसके स्थान पर धनलक्ष्मी की पूजा होने लगी।

दीपावली पर हम अपने घर, प्रतिष्ठान आदि की सफाई करते हैं। यह भी एक प्रतीक है जो यह शिक्षा देता है कि बाह्य स्वच्छता की तरह अन्तरंग मन तथा रागद्वेषादि भाव को हटाकर अपने हृदय को निर्मल तथा आत्मा को पवित्र बनाना चाहिए। धनतेरस को धन की पूजा के चक्कर में न पड़कर हम उस ध्यान का अभ्यास करें, जिसका अवलम्बन कर भगवान् महावीर ने मोक्ष की उपलब्धि की थी।

पूजन में खिलौने हैं उपदेश सभा के प्रतीक

दीपावली के दिन लक्ष्मी-पूजन के समय मिट्टी का घरौंदा और खेल-खिलौने भी रखे जाते हैं। ये भगवान् महावीर और उनके शिष्य गौतम गणधर की उपदेश सभा के प्रतीक हैं। चूंकि उनका उपदेश सुनने के लिए मनुष्य, पशु सभी जाते हैं, अतः उनकी स्मृति के रूप में उनकी मूर्तियां रखी जाती हैं। इस दिन प्रातः जैन मन्दिरों में भगवान् महावीर की पूजा के समय निर्वाण कल्याणक के अर्घ के समय अष्टद्रव्य के साथ लड्डू चढ़ाया जाता है। उसी दिन से वीर निर्वाण संवत् का प्रचलन हुआ जो वर्तमान प्रचलित संवतों में सर्वाधिक प्राचीन है।

ज्ञान की ज्योति जगाने के लिए दीपमालिका

भगवान् के निर्वाण के अवसर पर अनेक राजा, महाराजा, गणनायक, सामन्त, श्रेष्ठि तथा जन सामान्य पावापुर के उस सुरम्य पद्मसरोवर के तट पर एकत्र हुए जहां भगवान् ने आखिरी सांसें लीं। भगवान् के मुक्त होने पर उन्होंने सोत्साह निर्वाण की पूजा की। उसकी स्मृति को जागृत रखने के लिए पार्थिक दीपमालिका की जाती है। यह दीपमालिका उनकी दैवीय ज्ञानज्योति की प्रतीक है।

दीपोत्सव मनाए जाने के अन्य कारण

भारतवर्ष में दीपावली मनाए जाने के विभिन्न कारण है। कुछ का तो हिन्दू धर्म में उल्लेख है, लेकिन अधिकतर का स्थानीय संस्कृति और पहले से चली आ रही परंपरा से संबंध है। आइए जानते हैं इस त्योहार को मनाने के कारण-

- दीपावली के बारे में हिन्दू धर्म में यह मान्यता है कि इस दिन त्रेता युग में भगवान राम 14 वर्ष के वनवास और रावण का वध करने के बाद अयोध्या आये थे। इसी खुशी में अयोध्यावासियों ने समूची नगरी को दीपों के प्रकाश से जगमग कर उत्साह मनाया था और इस तरह तभी से दीपावली का पर्व मनाया जाने लगा।
- दीपावली के बारे में एक मान्यता यह भी है कि जब राजा बलि ने देवताओं के साथ लक्ष्मी जी को भी बंधक बना लिया तब भगवान विष्णु ने वामन रूप में इसी दिन उन्हें मुक्त कराया था। भगवान विष्णु ने राजा महाबली को पाताल लोक का स्वामी बना दिया था और इन्द्र ने स्वर्ग को सुरक्षित जानकर प्रसन्नतापूर्वक दीपावली मनाई थी।
- इसी दिन भगवान विष्णु ने नरसिंह रूप धारणकर के हिरण्यकश्यप का वध किया था।
- मान्यताओं के अनुसार इस दिन समुद्रमंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए थे।
- इस दिन के ठीक एक दिन पहले श्रीकृष्ण ने नरकासुर नामक राक्षस का वध किया था। दूसरे दिन इसी उपलक्ष्य में दीपावली मनाई जाती है।
- राक्षसों का वध करने के बाद भी जब महाकाली का क्रोध कम नहीं हुआ तब भगवान शिव स्वयं उनके चरणों में लेट गए। भगवान शिव के शरीर स्पर्श मात्र से ही देवी महाकाली का क्रोध समाप्त हो गया। इसी की याद में उनके शांत रूप लक्ष्मी की पूजा की शुरुआत हुई। इसी रात इनके रौद्ररूप काली की पूजा का भी विधान है।
- गौतम बुद्ध 17 वर्ष बाद अपने अनुयायियों के साथ अपने गृह नगर कपिलवस्तु लौटे थे। उनके स्वागत में लाखों दीप जलाकर दीपावली मनाई गई थी।
- इसी दिन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का राजतिलक हुआ था।
- इसी दिन गुप्तवंशीय राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने विक्रम संवत की स्थापना करने के लिए धर्म, गणित तथा ज्योतिष के दिग्गज विद्वानों को आमन्त्रित कर मुहूर्त निकलवाया था।
- इसी दिन अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ था। सिक्खों ने दीप जलाकर उत्सव मनाया था।
- दीपावली ही के दिन सिक्खों के छठे गुरु हरगोबिन्द सिंह जी को कारागार से रिहा किया गया था।
- इसी दिन आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का निर्वाण हुआ था।
- इस दिन से नेपाल संवत में नया वर्ष आरम्भ होता है।

युवा विचार

जहां चाह वहां राह

शिखा जैन
बापू नगर, जयपुर

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो किसी कार्य के लिए अनुकूल समय का इंतजार करते हैं। अवसर की तलाश में रहते हैं। इस इंतजार में एक-एक दिन गुजरता जाता है। जबकि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो वक्त का इंतजार नहीं करते बल्कि हर वक्त अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। कुछ लोग सफलता के सपने देखते रहते हैं, लेकिन कर कुछ नहीं पाते। जबकि कुछ ऐसे होते है जो जागते हैं और अपने सपने को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। आत्मविश्वास से भरे हुए ऐसे लोग प्रत्येक परिस्थिति में अपने लिए रास्ता निकाल लेते हैं। उनका यह आत्मविश्वास ही उन्हें सफलता की राह दिखाता है। सच तो यह है कि हम कोई भी सफलता जब चाहे तब हासिल कर सकते हैं बशर्ते हम पूर्ण रूप से उसके लिए समर्पित हों।

सफलता वह ऊंचाई है जहां व्यक्ति क्रम से सीढ़ियां चढ़कर पहुंचता है। सफलता एक दिन में नहीं मिलती। उसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यह सही है कि किस्मत की भी एक भूमिका होती है, लेकिन किस्मत भी उन्हीं का साथ देती है जो कोशिश करते हैं। किनारे पर बैठ कर मोती नहीं मिलते। इसके लिए सागर की गहराई में जाना ही पड़ता है। मेहतन और दृढ़ संकल्प एक दिन सफलता जरूरत दिलाते हैं। अक्सर कुछ कर पाना कठिन इसलिए होता है कि हम हिम्मत ही नहीं करते। विफलता का डर हमें कुछ करने से रोकता रहता है, लेकिन यह भी सच है कि जब तक किसी काम को किया नहीं जाता वह असंभव ही लगता है। हम अगर किसी चीज की कल्पना कर सकते हैं तो उसे साकार भी कर सकते है। जिन लोगों ने हवाई जहाज, रॉकेट, अंतरिक्ष में जाने का सपना देखा, उन्होंने अपने प्रयास से उसे साकार भी किया ही है।

सफलता पाने के लिए सही रास्ता चुनना भी जरूरी है। इसके लिए मेरा मानना यह है कि अगर किसी व्यक्ति में धार्मिक संस्कार है और उसे अपने धर्म पर विश्वास है तो वह सफलता पाने के लिए कुछ गलत काम नहीं करेगा। सही रास्ते पर चलते हुए मेहनत करेगा और सफलता प्राप्त करेगा। यह रास्ता लम्बा जरूर लगेगा, लेकिन जो सफलता मिलेगी, वह स्थाई और सौ टका खरी होगी।

आज इस विपरीत दौर में भी कुछ लोग सफल हो रहे हैं, लेकिन किसी गलत मार्ग से नहीं बल्कि अपनी योग्यता से उन्होंने यह सफलता हासिल की है। उन्हें देखिए और अपनी तुलना उनसे कीजिए, पर इस तुलना में ईष्या का भाव ना रखते हुए प्रेरणा प्राप्त करें और अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े, सफलता जरूर मिलेगी।

कोई भी व्यक्ति जब यह ठान लेता है कि उसे अपने लक्ष्य को पाना है और वह इसके लिए कड़ी मेहनत करता है तो उसकी राह अपने आप आसान हो जाती है। ऐसे कई उदाहारण हमारे सामने हैं। जरूरत इस बात की है कि हम उन उदाहरणों से कुछ सीखें, संकल्प करें और पूरी मेहनत से उस रास्ते पर आगे बढ़ें।

सेहत

उपवास कीजिए और स्वस्थ रहिए

आमतौर पर यह माना जाता है कि स्वस्थ रहने के लिए अच्छा खाना-पीना जरूरी है। अच्छे भोजन से ही शरीर को आवश्यक उर्जा मिलती है। लेकिन क्या आप जानते है कि अच्छा खाने से ही नहीं अच्छा व्रत या उपवास करने से भी आप स्वस्थ रहते हैं...जी हां शरीर के लिए जितना खाना जरूरी है, उतना ही उपवास करना भी जरूरी है। जैन धर्म में तो उपवास को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। इसे साधना का अंग और उत्तम त्याग माना गया है। वैसे भी जैन धर्म के सारे नियमों और सिद्धांतों की अपनी वैज्ञानिकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी स्वयं उपवास को बहुत महत्व देते थे और इसे स्वस्थ रहने के लिए बहुत जरूरी मानते थे।

तो आइए जानते है व्रत या उपवास क्या है और इसके क्या फायदे होते हैं-

व्रत-उपवास- व्रत में हम आमतौर पर एक समय खाना खाते है। जैन धर्म में व्रत में एक समय भोजन और उसी समय पानी पीने की व्यवस्था है। इसके अलावा दिन भर में कुछ भी नहीं लिया जाता है। वहीं उपवास का अर्थ पूरी तरह से निराहार रहना। यानी कुछ भी नहीं खाना। जैन धर्म में तो उपवास के दिन जल भी एक बार ही लिया जाता है।

व्रत-उपवास के लाभ- व्रत या उपवास में जब आप कुछ खाते या पीते नहीं है तो इससे आपके शरीर की कोशिकाओं और विशेषकर पाचन तंत्र को बहुत आराम मिलता है। यह उनके लिए एक तरह से आराम का दिन होता है और जैसे हम आराम करने के बाद ताजगी महसूस करते है, ऐसे ही हमारी कोशिकाएं और पाचन तंत्र भी आराम के बाद ज्यादा ताजगी महसूस करता है और इसके बाद जब खाना शुरू करते हैं तो यह तंत्र ज्यादा बेहतर ढंग से काम करता है। यही कारण है कि व्रत और उपवास के कई लाभ हमें मिलते है। इनमें से कुछ प्रमुख लाभ इस प्रकार हैं-

- उपवास करने से शरीर के भीतर मौजूद विषाक्त पदार्थ साफ हो जाते हैं।
- उपवास करने से हमारे शरीर के अंदर मौजूद अतिरिक्त वसा तेजी से गलती है और इससे हमारे शरीर के कई प्रमुख अंगों को लाभ मिलता है।
- व्रत करने से नई रोग प्रतिरोधक कोशिकाओं के बनने में मदद मिलती है।
- कई अध्ययन बताते हैं कि उवपास करने से मेटाबॉलिक रेट में 3 से 14 फीसदी तक बढोत्तरी होती है। इससे पाचन क्रिया और कैलोरी बर्न होने में कम वक्त लगता है।
- उपवास करने से डिप्रेशन और मस्तिष्क से जुड़ी कई समस्याओं में फायदा होता है।
- जिन लोगों को डायबीटीज है उनके लिए उपवास रखना फायदेमंद हो सकता है क्योंकि इससे ब्लड शुगर को बेहतर ढंग से नियंत्रित किया जा सकता है। उपवास रखने से इंसुलिन रेजिस्टेंस घटता है और शरीर में इंसुलिन के प्रति सेंसिटिविटी बढ़ती है जिससे खून में मौजूद ग्लूकोज को कोशिकाओं तक पहुंचाना आसान हो जाता है।
- दिल से जुड़ी बीमारियों के खतरे से बचने के लिए तो वैसे भी बहुत नियंत्रित खानपान की बात कही जाती है। उपवास रखने से शरीर में मौजूद बैड कलेस्ट्रॉल का लेवल कम होता है, ब्लड प्रेशर भी कंट्रोल में रहता है।
- उपवास रखने से रोग प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत होती है। यह शरीर में मौजूद फ्री रैडिकल्स से होने वाले नुकसान को कम करता है। शरीर में किसी भी तरह की सूजन और जलन की समस्या को कम करता है।

यह रखें सावधानी

- यदि पहले से कोई गम्भीर बीमारी है तो डॉक्टर से पूछे बिना उपवास ना करें।
- एक बार में 24 घंटे से ज्यादा उपवास ना करें।
- उपवास के तुरंत बाद अधिक तेल, मसाले वाला भोजन ना करें, अन्यथा इससे आपको फायदे के बजाए नुकसान हो जाएगा।

धारावाहिक

20वीं सदी की चारित्र कथा

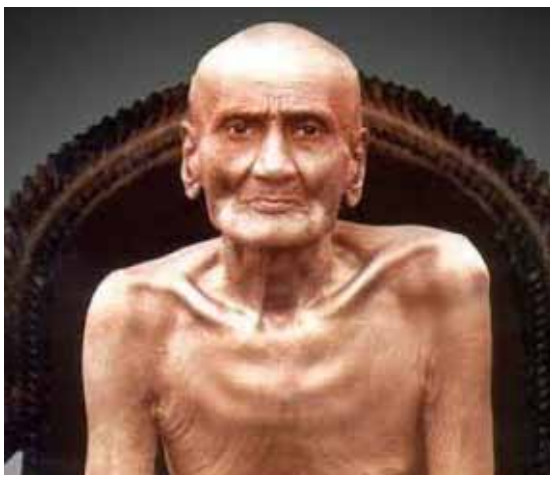

मंथन के पाठकों के लिए इस अंक से हम एक धारावाहिक कथा शुरू कर रहे हैं। यह कथा 20वीं शताब्दी के प्रथमाचार्य आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के प्रेरणादायी जीवन से जुड़ी है। शांति सागर जी महाराज मुनि चर्या को पुनर्जीवित करने वाले आचार्य हैं और उनके जीवन के सभी प्रसंग अद्भुत प्रेरणादायी हैं। इन प्रसंगों पर आधारित एक पुस्तक अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर जी महाराज ने लिखी है। यह पुस्तक ही अब धारावाहिक के रूप में मंथन के पाठकों के लिए उपलब्ध कराई जा रही है।

लेखक
अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज
(शिष्य आचार्य अनुभव सागर जी महाराज)

क्रम- 1

गृहस्थ रहकर भी बने जो महान वीतरागी संत

मुनि चर्या को पुनर्जीवित करने वाले संत शिरोमणी आचार्य शांति सागर जी महाराज

हम आपको 20 वीं सदी के एक ऐसे महान संत से परिचित कराने जा रहे हैं, जिन्होंने अपने समूचे जीवन को संयम, संस्कार, दया, करुणा और त्याग जैसी अनमोल भावनाओं से सिंचित किया। ये संत थे आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज। एक ऐसे संत, जिन्होंने 20वीं सदी में मुनि चर्या का निर्दोष पालन किया और मुनि चर्या को पुनः जीवंत किया। उनकी की महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपने ही दीक्षा गुरु को दीक्षा दी। उनका जीवन प्रकृति के अनुसार था और कभी विकृति को प्राप्त नहीं हुआ। उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से उन्हें ताड़ पत्र पर लिखवाया। बाल विवाह, विधवा विवाह जैसे विषयों पर समाज का मार्गदर्शन किया। उन्होंने समाज की अनेक कुप्रथाओं और कुपरंपराओं को बंद करवाया। इतना सब करने के बावजूद गृहस्थ और संत जीवन में कभी अपनी चर्या में दोष नहीं लगने दिया। खास बात यह भी थी कि वह गृहस्थ रहकर कर भी संत जैसे रहे। उन्होंने खेती करते हुए भी कभी तिर्यंच प्राणियों को कष्ट नहीं दिया। आगामी 20 मार्च को उनकी मुनि दीक्षा के 99 वर्ष पूर्ण होंगे और शताब्दी वर्ष प्रारम्भ होगा। ऐसे महान वीतरागी, पथ प्रदर्शक संत आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की चर्या, ज्ञान और निस्पृहता से हम आपको निरंतर अवगत करवाएंगे। आचार्य श्री निर्दोष चर्या को देख कर समाज, शिष्यों ने उनके नाम के आगे चारित्र चक्रवर्ती लगाया। वहीं वह 20 वीं सदी के पहले आचार्य बने तो उनके नाम के आगे प्रथमाचार्य जैसे शब्दों के उपयोग होने लगा। उन्होंने मुनि परम्परा और चर्या को जिस तरह पुनर्जीवित किया, उसी का परिणाम हम आज देख रहे हैं कि समस्त भारतवर्ष में जिनशासन व दिगम्बरत्व की प्रभावना है।

अगली कड़ियों में उनके जीवन के सभी पक्षों के बारे में विस्तार से चर्चा होगी....जीवन को सफल बनाने के लिए एक प्रेरणादायी संत की यह गाथा पढ़ते रहिए।

काव्यमन

जीवन

शिखा जैन
बापू नगर, जयपुर

इस जीवन रूपी वन में
यह जीव भटकता रहता है
कर्मों के जंजाल में
यूं ही फंसता रहता है
पाना चाहता है मंजिल
रास्ता ढूंढता रहता है
और मंजिल के इन रास्तों में
खुद ही कांटे बोता है
इस जीवन रूपी वन में
यह जीव भटकता रहता है
यह जीव भटकता रहता है

सुदृष्टि

कोरोना आपदा में अवसर

मनीष गोधा

कोविड-19 के संक्रमण ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया। दुनिया के बड़े-बड़े देश तक इसकी चपेट में आ गए। अर्थव्यवस्थाएं चैपट हो गई। सामजिक आचार-व्यवहार बदल गए और जो कुछ हमने देखा वह ऐसा था, जो पहले कभी किसी ने नहीं देखा। कम से कम हमारी और हमसे पहले वाली तीन-चार पीढ़ियो ने तो यह सब नहीं देखा। फिर चाहे वह लॉकडाउन हो या दो-दो महीने का कफ्र्यू या फिर महीनों तक मंदिर और धार्मिक स्थल बंद होना, लेकिन क्या कोरोना सिर्फ एक आपदा है....हां...आपदा तो है, हम देख और भुगत ही रहे हैं, लेकिन थोड़ा गहराई में जाएंगे.....विश्लेषण करेंगे तो महसूस होगा कि इस आपदा ने भी कुछ नए अवसर दिए हैं। ये अवसर हर तरह के हैं। हमारे निजी सम्बन्धों और परिवार से लेकर समाज और फिर आगे हमारे व्यापार और नौकरी तक में इस कोरोना ने कुछ नए सबक, कुछ नई बातें हमें सिखाई हैं और नए अवसर पैदा किए हैं। आइए...जरा इन अवसरों को टटोलते हैं-

निजी तौर पर- कोरोनाकाल का लॉकडाउन शायद पहला अवसर था, जब हमें हमारी भागदौड़ भरी जिंदगी में थोड़ा ब्रेक मिला। हम चाह कर भी यह ब्रेक नहीं ले पाते थे। काम और हमेशा आगे रहने का दबाव हमें चैन से बैठने नहीं देता था। लॉकडाउन ने हमें जबरन घर बैठाया और यह मौका दिया कि हम अब तक जिस तेजी से भाग रहे थे, उसकी रफ्तार कुछ कम करें और एक ब्रेक ले कर यह सोचें कि यह सारी भागदौड़ तो ठीक है, जरूरी भी है, लेकिन ब्रेक भी उतना ही जरूरी है। जीवन की रफ्तार को नियंत्रित रखना भी जरूरी है। खुद के लिए समय निकालना भी जरूरी है। इस ब्रेक ने हमें मौका दिया कि हम अपने शरीर और दिमाग को कुछ आराम दें और इसे रिफ्रेश करें ताकि आने वाले समय के लिए जो चुनौती भरा होने वाला है, उसके लिए कुछ नया और बेहतर सोच सकें।

परिवार के लिए- कोरोनाकाल पहला ऐसा समय रहा जब हम वास्तव में अपने परिवार के साथ रहे। अब तक हम कहीं परिवार के साथ घूमने भी जाते थे या कुछ समय बिताते भी थे तो हमारी नौकरी, हमारा व्यापार, हमारी पढ़ाई, कुछ ना कुछ हमेशा बाधा बना रहता था, परेशान करता रहता था। कोरोना के दौरान एक लम्बा समय ऐसा रहा, जब किसी के पास कोई काम नहीं था। हमें सिर्फ अपने परिवार के साथ रहना था। बहुत से पुरूषों ने इस दौरान यह पहली बार जाना और महसूस किया कि महिलाएं घर में कितना काम करती है। घर परिवार से दूर रह कर पढ़ाई या नौकरी करने वाले बच्चों को घर लौटना पड़ा और उन्होंने काफी समय बाद एक लम्बा समय परिवार के साथ बिताया। परिवार की कीमत जानी। व्यापार और नौकरी के कारण दूर होते जा रहे परिजन एक बार फिर साथ बैठे और आपस में जुड़ाव महसूस किया।

समाज के रूप में- वैसे तो हमारा सामाजिक ताना-बाना काफी मजबूत है और आपदाओं में इसकी मजबूती दिखती भी है, जब लोग दूसरों की सहायता के लिए आगे आते हैं, लेकिन कोरोनाकाल में लगभग हर सक्षम परिवार ने जिस तरह गरीबों और हजारों किलोमीटर पैदल चल कर घर लौटते परिवारों की मदद की, उन्हें खाना, कपड़े, पैसा आदि उपलब्ध कराया, वह देखने लायक था। आमतौर पर परेशान करने वाली पुलिस का अलग ही रूप इस दौरान दिखा जब पुलिस के जवान चैराहों और गलियों में लोगों को खाना बांटते और मदद करते नजर आए। इस पूरे घटनाक्रम ने एक समाज के तौर पर हमें काफी मजबूत बनाया। हमारे धार्मिक, सामजिक आयोजन जैसे शादी, गमी आदि में जम कर फिजूलखर्ची होती थी। अब लोगों के आने की सीमा बांध दी गई है तो यह फिजूलखर्ची भी बंद हो गई है। मृत्युभोज की परम्परा पर आज तक पूरी रोक नहीं लग पाई थी, लेकिन कोरोना के कारण लोगों ये भोज बंद करने पडे और वे इनकी व्यर्थता को समझ गए।

कारोबार और नौकरी के मामले में- कोरोना के दौरान यह एक ऐसा क्षेत्र रहा, जिस पर सबसे ज्यादा प्रतिकूल प्रभाव देखा गया। लोगों के काम धंधे बंद हो गए। कई व्यापार तो पूरी तरह चैपट हो गए। लोगों की नौकरियां चली गई या वेतन में भारी कटौती हो गई। यह सब निश्चित रूप से पीड़ादायी था और अभी भी लग रहा है, लेकिन देखा जाए तो इस आपदा ने ही हमें कुछ और नया सोचने और करने के लिए मजबूर भी किया। कहते हैं कि एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा खुलता भी है। कुछ ऐसा ही इस दौरान भी हुआ। अब तक सिर्फ नौकरी तलाशने वाले हजारों लोगों ने आत्मनिर्भर हो कर खुद का कुछ काम करने की सोची और काम शुरू भी किया। कुछ नए व्यापार जैसे मास्क बनाना, सेनेटाइजर बनाना, सेनेटाइजिंग किट, पीपीई किट का निर्माण आदि शुरू हुए, ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में लोगों ने काफी नए प्रयोग किए। जो लोग दूसरे राज्यों में जा कर काम कर रहे थे, वे जब अपने घरों को लौटे तो कई लोगों ने अपने हुनर को अपने गांव कस्बे में ही इस्तेमाल करना शुरू किया। खेती-किसानी का काम करने वालो की संख्या पहले के मुकाबले काफी बढ़ गई। नई पीढ़ी जो खेती से दूर हो रही थी, उसे भी इसमें अवसर नजर आने लगे। यह बात सही है कि जितना नुकसान हुआ है, उसके मुकाबले भरपाई काफी कम है, लेकिन कम से कम हमने एक बंधे बंधाए ढर्रे से बाहर सोचना तो शुरू किया और जैसी स्थितियां है, उसे देखते हुए यह सिलसिला आगे जारी रहेगा।

धार्मिक तौर पर- अब तक धार्मिक क्रियाएं हम सिर्फ मंदिर जा कर करते थे। मंदिर गए और यह मान लेते थे कि आज का धर्म पूरा हो गया। घरों में पूजन-पाठ और स्वाध्याय आदि बंद हो गया था। कोरोनाकाल में मंदिर बंद हुए तो घर-घर मंदिर हो गया। घरो में प्रतिदिन णमोकार महामंत्र और भक्तामर के पाठ होने लगे। आरती होने लगी। विशेष अवसरों पर तो हमने पूजा भी घर पर की। इससे घर का वातावरण भी निर्मल हुआ।

ऐसे और भी कई बदलाव हमारे दैनिक जीवन में हुए है, जिन्हें सकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो लगेगा कि कोरोना एक आपदा तो है, लेकिन इसने हमें हमारे जीवन को नए सिरे से शुरू करने और नई सोच विकसित करने का अदभुत अवसर भी दिया है।

यह चित्र कुछ कहता है

पैंटालल वेटलैंड्स (ब्राजील) » पैंटानल एक विशाल मौसमी बाढ़ क्षेत्र है, जिसे दुनिया के सबसे बड़े आर्द्र क्षेत्रों के रूप में जाना जाता है। पैंटानल एक पुर्तगाली शब्द है जिसे दलदल या आर्द्रभूमि कहा जा सकता है। पैंटाल में विभिन्न प्रकार के उप-क्षेत्रीय पारिस्थितिक तंत्र होते हैं, जिनमें अलग-अलग हाइड्रोलॉजिकल, पारिस्थितिक और भूवैज्ञानिक विशेषताएं होती हैं। बारिश के मौसम में क्षेत्र के दो तिहाई से अधिक क्षेत्र पूरी तरह से जलमग्न हो जाते हैं।

सवाल - जवाब

धर्म-आध्यात्म, जीवन आदि से जुड़े कई विषय ऐसे होते हैं जिनके बारे में या तो हम जानते ही नहीं और जानते भी हैं तो हमें पूरा ज्ञान नहीं होता। कई तरह के सवाल, शंकाएं दिमाग में रह जाती हैं और उचित समाधान नहीं मिल पाता। यह आधा-अधूरा ज्ञान कई बार बड़ी समस्याएं भी खड़ी कर देता है। शंका-समाधान इन सवालों का जवाब ढूंढने का ही प्रयास है। आपके जो भी सवाल हों, वो हमें भेजें और हम इन शंकाओं का समाधान करने का प्रयास करेंगे। इस बार की शंकाओं का समाधान अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज ने किया है। ये शंकाएं हमें भेजी है भक्ति सारगिया, बांसवाड़ा ने।

प्रश्न- जैन धर्म के विस्तार पर बात क्यों नहीं होती? उसके समकालीन बौद्ध धर्म ने दुनिया भर में पैर पसार लिए हैं?

उत्तर- इस बात को इस तरह समझें कि देश का प्रधानमंत्री एक ही होता है। उपप्रधानमंत्री और केबिनेट मंत्री एक से अधिक हो सकते हैं। पिता जब अपने बच्चों को अपनी सम्पत्ति का हिस्सा देता है तो छोटे बच्चे को अधिक देने का प्रयास करता है। बस यही स्थिति दोनों धर्म की है। दोनों सुख, शान्ति और समृद्धि की बात करते हैं पर जैन धर्म त्याग के अंतिम चरण की बात से अपनी बात प्रारंभ करता है और त्याग पर आकर समाप्त करता है। इसलिए देश में बौद्ध धर्म अधिक पैर पसार रहा है। जो धर्म त्याग की कम बात करेगा, वह उतना अधिक पैर पसारेगा।

प्रश्न- समाज की दिशा और दशा बदलने में संत समुदाय किस तरह अहम् भूमिका निभा सकता है? वर्तमान परिपेक्ष्य में आप क्या मानते हैं कि संत इसमें कितने सफल हुए हैं?

उत्तर- समाज में केवल संत ही हैं, जो समाज की दशा और दिशा बदलने की क्षमता रखते हैं। अगर संत ठान लें तो भारतीय संस्कृति और संस्कारों का चीर हरण कोई नहीं कर सकता। संस्कृति का मतलब व्यक्ति के पैदा होने से लेकर मरण तक की सारी क्रिया से है। सात्विक संत ही समाज का पुनरूद्धार कर सकता है। सात्विक यानी धन, स्त्री और जमीन से दूर रहने वाला व्यक्ति । आजकल के संत फैशन शो में उस प्रतियोगी की तरह नजर आते हैं, जो स्वयं हर हाल में प्रथम आने का इन्तजार करते हैं। अब समाज को ही सोचना चाहिए कि वह किस तरह के संत का सान्निध्य ले रहा है। संत तो मन, वचन और कर्म से सात्विक होता है। आज के दौर में चंद संत ही हैं, जो समाज को साथ लेकर भलाई के लिए काम कर रहे हैं।

प्रश्न- धर्म के विस्तार में क्या बाधाएं रहीं, उसे दूर करने के क्या प्रयास हो रहे हैं?

उत्तर- धर्म समाज के कल्याण और मर्यादा का परिचायक माना जाता है। जहां भी मर्यादा का उल्लंघन होगा, धर्म अपने आप सरल हो जाएगा और उसका विस्तार होने लगेगा लेकिन उस धर्म की कोई गारंटी नहीं होगी कि वह समाज का कल्याण करेगा या नहीं। मां सीता ने क्या किया? लक्ष्मण की रेखा की जो मर्यादा थी, उसका उल्लंघन किया तो विपदा आ गई। सीता गलत नहीं थीं पर उन्होंने मर्यादा का उल्लंघन किया तो संकट का सामना करना पड़ा। बस धर्म को उसकी मर्यादा में ही रहने दें, उसका विस्तार करने की कोशिश नहीं करें क्योंकि विस्तार के लिए सरलता जरूरी है और सरलता से धर्म की आत्मा खत्म हो सकती है जो वह संकट का कारण बन सकता है।

प्रश्न-धर्म में भी विकृतियां पैदा हो रही हैं, इन्हें कैसे दूर किया जा सकता है?

क्या पानी का स्वभाव जो ठंडा है, वह गर्म हो सकता है? वह गर्म होता भी है तो वापस ठंडा हो जाता है, क्योकि उसकी प्रकृति ही ठंडी है। जब ऐसा नहीं हो सकता है तो धर्म में विकृतियां कैसे आ सकती हैं? विकृतियां तो मानव में आ रही हैं, वह मानव से तिर्यंच, राक्षस बनने की क्रियाएं दिनभर कर रहा है। अब बताइए क्या तिर्यंच, राक्षस धर्म कर सकता है? शराब का स्वभाव नशा देना, अग्नि का स्वभाव जलाना है। क्या शराब में नशा देना बंद हो गया? अग्नि ने ऊष्णता की जगह शीतलता देना प्रारम्भ कर दिया? नहीं तो, धर्म में विकृतियां पैदा हो रही हैं, यह कैसे मान लें? मानव का स्वभाव है खुशियां बांटना और स्वयं खुश होना। दया, करूणा, प्रेम, वात्सल्य का सभी के लिए होना यही मानव का स्वभाव है। जब किसी ने अपना स्वभाव नहीं छोड़ा तो धर्म में बदलाव कैसे आ सकता है?

प्रश्न- क्या धर्म, मंदिर, आध्यात्म इतने क्लिष्ट हो गए हैं कि एकाएक लोग इससे जुड़ने में कतराते हैं, दूर भागते हैं?

उत्तर- सही मायने में लोग धर्म की परिभाषा को ही नहीं समझ पा रहे हैं। धर्म मात्र बौद्धिक उपलब्धि ही नहीं है, वह इंसान की स्वाभाविक आत्मा भी है। धर्म का अर्थ है आत्मा से आत्मा को देखना, आत्मा से आत्मा को जानना। आत्मा से आत्मा में स्थिर होना। क्या स्वयं को स्वयं से जानना क्लिष्ट है? अपने आप में स्थिर होना क्लिष्ट है? नहीं, तो फिर धर्म को क्लिष्ट कैसे समझा जा रहा है? जो लोगों को दिख रहा है, वह धर्म नहीं है। वह तो मान-सम्मान और लोक लाज के लिए किया जाने वाला जतन है। सही मायने में जो लोग आध्यात्म की शरण में जाएंगे, ईश्वर रूपी ताकत में विश्वास रखेंगे, वही प्रगतिशील बने रहेंगे। संतों की वाणी में वह कशिश होती है, जो साधक को ईश्वर से जोड़ने का काम करती है। ऐसे में संतों का सान्निध्य ईश आशीर्वाद का माध्यम बन जाता है।